1 N] म.प्र. को 11 कृषि जलवायु क्षेत्रों में बाटा गया है

1. कैमूर पठार एवं सतपुड़ा पहाड़ी क्षेत्र
2. छत्तीसगढ़ का मैदान
3. छत्तीसगढ़ का उत्तरी पहाड़ी क्षेत्र
4. मध्य नर्मदा घाटी
5. विन्ध्य पर्वत क्षेत्र
6. गिर्द क्षेत्र
7. बुन्देलखण्ड क्षेत्र
8. सतपुड़ा पठार
9. मालवा पठार
10. निमाड़ का मैदान
11. झाबुआ पहाड़ी क्षेत्र

1 P] म.प्र. सरकार द्वारा शालाओं को 5 स्टार में प्रदान योजना शुरू करना। इसका आरंभ वर्ष 2010 में किया गया।

1 Q] शौर्य दल योजना - महिलाओं / बालिकाओं के विरुद्ध, हिंसा, अपराध उत्पीड़न, यौन शोषण की घटनाओं पर अंकुश लगाने के लिये 2.. शुरू किया गया।

- वर्ष 2015 में इसे लाइफ आफ इंडिया - अवार्ड दिया गया।

[G] 1. बाणसागर परियोजना तीन राज्यों (म.प्र + उ.प्र + बिहार) की संयुक्त परियोजना है।
2. यह सोन नदी पर स्थित है।
3. क्षमता - 425 MW

[H]. चचाई जल प्रपात एक प्राकृतिक एवं गोलाकार जल-
1. प्रपात है। बीहर नदी रीवा में स्थित है।
2. ऊँचाई - 130 मी
3. भारत के 'नियाग्रा' की संज्ञा।

[i] सतपुड़ा पर्वत श्रेणी के प्रमुख पर्वतीय भाग
1. राजपीपला पर्वत श्रेणी
2. मैकल श्रेणी
3. महादेव श्रेणी

[J]. - म.प्र. के प्रमुख लावा उत्पादक क्षेत्र
1. मलाजखण्ड - बालाघाट
2. सिलगवां बाद - जबलपुर
3. होशंगाबाद, सागर, आदि

[K] - मप्र के प्रमुख सीमेंट कारखाना -
1. बामनोर (मुरैना).
2. कटनी (पोर्टलैंड सीमेन्ट)
3. जेपी सीमेंट - रीवा
4. विक्रम सीमेंट - सतना

1. (M) - रोको टोको अभियान - मास्क न पहनने वालों के खिलाफ चलाया गया।
कोविड '19' की सुरक्षा भारत चलाया गया हेतु

Part B

Q-1

1 A] म. प्र. के औद्योगिक क्षेत्र

1. पीथमपुर (धार)
2. पुरैना (पन्ना)
3. मालनपुर (भिंड)

1 B] मालवा के पठार की अवस्थिति

- अक्षांशीय विस्तार - 23.06° N - 24.25° उ. अक्षांश
- देशान्तर विस्तार - 71.31' - 73.42.° पूर्वी देशान्तर

1 C] भारिया जनजाति म. प्र. के छिंदवाड़ा जिले में पायी जाती है।

- म. प्र. की यह विशेष पिछड़ी जाति का दर्जा प्राप्त है।
- मुख्य देवता - बूढ़ा देव, नागदेव, दूल्हादेव

1 D] म. प्र. में मृदा अपरदन के कारण

1. अर्द्ध शुष्क जलवायु
2. महीन चिकनी तथा दोमट मिट्टी
3. अति दोहन एवं घास भूमियों का क्षरण

1 E] माही नदी का उद्गम धार जिले के समीप "मिण्डा" ग्राम की "विन्ध्याचल पर्वत" श्रेणी से हुआ।

- इसकी लम्बाई 580 Km है।
- भारत की एक मात्र नदी जो कर्क रेखा को दो बार काटती है।

1 F]

ग्वालियर का किला - निर्माण कछवाहा शासक सूरज सेन ने ऋषि गालव की स्मृति में 500 ईस्वी में करवाया था।
• इसे "दुर्ग के मिप्राल्य की संज्ञा" दी जाती है।
• यह गोपाचल पर्वत पर स्थित है।

माण्डू का दुर्ग - इसमें 12 दरवाजे हैं। माण्डू को 'सिटी आफ ज्वायं' कहा जाता है। यहाँ जहाज महल, रानी रूपमती का महल, हिंडोला महल प्रमुख है।

ओरछा का दुर्ग - बेतवा नदी तट पर स्थित ओरछा दुर्ग बुंदेला राजाओं के शौर्य और त्याग की कहानी प्रस्तुत है। जहांगीर महल यहां स्थित है।

खजुराहो - चंदेल शासक द्वारा निर्मित, छतरपुर में स्थित है। विश्व धरोहर स्थल के रूप में 1986 में शामिल किया गया।

हिंगलाज गढ़ का किला - मंदसौर के भानपुरा तहसील के नवल गांव में स्थित है। नाम करण 'हिंगलाज' माता के नाम पर जो क्षत्रियों की कुल देवी है।

नरवर का किला - शिवपुरी में स्थित राजा नल द्वारा निर्माण करवाया गया।

इन विवरणों से स्पष्ट होता है कि म.प्र. ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों से समृद्ध राज्य है। राज्य पर्यटन विकास - निगम विभाग पर्यटन को बढ़ावा देने में कार्यरत है।

म.प्र. के पर्यटन क्षेत्र को निम्न लिखित आधारों पर वर्गीकृत कर सकते हैं।

पर्यटन स्थल

धार्मिक स्थल
- उज्जैन
- चित्रकूट
- मैहर
- बावनगजा
- साँची

पुरातात्विक स्थल
- भीम बेटिका
- साँची
- उदयगिरि
- बाघ की गुफाएं

प्राकृतिक स्थल
- पचमढ़ी
- अमरकंटक
- मान्दीप झरना
- अभयारण्य

ऐतिहासिक स्थल
- ग्वालियर का दुर्ग
- मांडू
- रानी महल
- खजुराहो
- ओरछा

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से म.प्र. में प्राचीन काल से आधुनिक काल तक अनेक स्थल मौजूद हैं, जिन्हें देखकर सैलानी अपने अतीत के गौरव और मानव जीवन की सांस्कृतिक एवं सामाजिक विशेषताओं एवं मान्यताओं से परिचित हो सकता है।

ऐतिहासिक स्थलों के कुछ विवरण निम्न लिखित हैं -

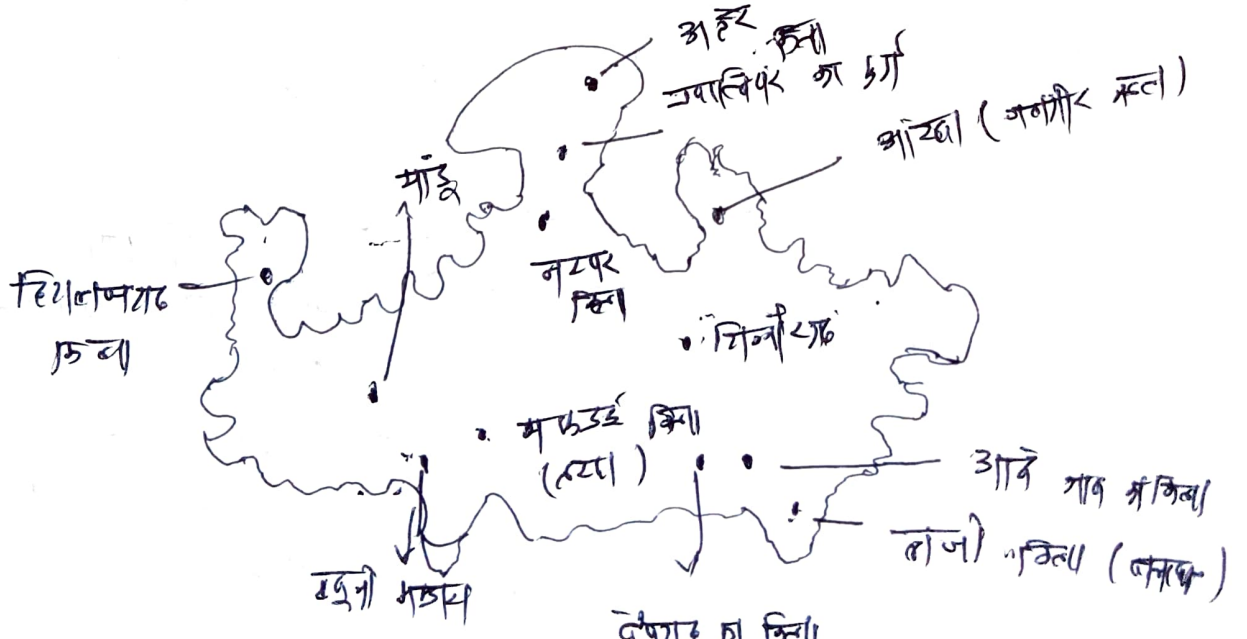

विभाजन से म.प्र. पर व्यापक स्तर पर आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक तथा सांस्कृतिक परिवर्तन हुए।

आर्थिक प्रभाव - म.प्र. की अर्थव्यवस्था में खनिज संपदा का ह्रास हुआ।

2. औद्योगिक क्षेत्र यथा भिलाई इस्पात संयंत्र, ताप विद्युत केन्द्र, कोरबा सभी छत्तीसगढ़ में गये।

3. वन संपदा एवं प्राकृतिक भू भाग का ह्रास।

सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभाव - आदिवासी का बाहुल्य क्षेत्र अपनी सांस्कृतिक एवं सामाजिक विविधता से युक्त म.प्र. से विलग हो गया।

भौगोलिक सीमाओं में परिवर्तन - विभाजन के फलस्वरूप म.प्र. का नया सीमांकन हुआ। दक्षिण पश्चिम में पूर्व में विस्तार कम हुआ।

निष्कर्षतः म.प्र. के विभाजन अपनी नई चुनौतियां एवं अवसरों के साथ संघर्ष एवं विकास की नवीन संभावनाओं के साथ म.प्र. अपनी क्षमताओं का भरपूर उपयोग कर म.प्र. को अग्रणी राज्य बनाने में अग्रसर है।

---

3 E] पर्यटन का मानव जीवन में बहुआयामी प्रभाव पड़ता है। इससे न केवल हमारी बौद्धिक एवं मानसिक चेतना का विकास होता है बल्कि ज्ञान वर्धन के साथ साथ लोगों को रोजगार एवं ऐतिहासिक, धार्मिक एवं अन्य पुरातात्विक स्थलों के संरक्षण एवं संवर्धन को बल मिलता है। पर्यटन की दृष्टि से म.प्र. एक प्रमुख राज्य

1956 के बाद की स्थिति — विभिन्न समितियों ने नये म.प्र. का गठन किया - जिसमें प्रमुख समितियां हैं-

- B.R. दुबे समिति - 1983 - 25 मई 1998 को 8 नये जिले थे जिनमें से 4 म.प्र में हों।
- M.S. सिंहदेव समिति - 1998 में सिफारिश कर 8 नये जिलों का सुझाव। इनमें से 3 म.प्र के अंतर्गत- उमरिया, हरदा, नीमच हैं।

वर्ष 2000 के पूर्व म.प्र की स्थिति

म.प्र क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का प्रथम राज्य था। जिसमें 52 जिले शामिल थे।

84 वां संविधान संशोधन विधेयक - इसके माध्यम से छत्तीसगढ़ का गठन, नये राज्य के रूप में वर्ष 2000 में किया। जिसमें - 16 जिला शामिल थे।
छत्तीसगढ़ के विभाजन उपरांत नवीन म.प्र का भौगोलिक स्थिति निम्नवत था-

छत्तीसगढ़ का निर्माण म.प्र के पूर्वी एवं दक्षिणी जिलों को विभाजित कर बनाया गया।

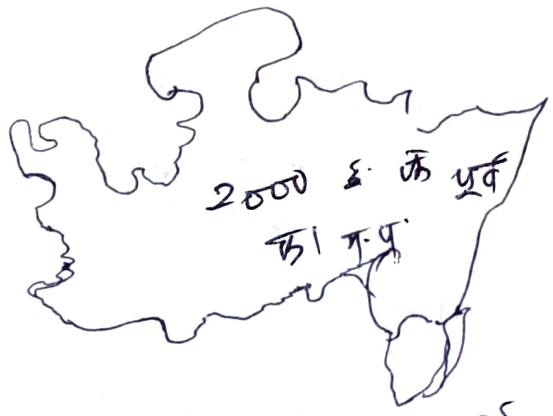

3.3] म.प्र का गठन राज्य पुनर्गठन आयोग 1953 की अनुशंसा पर 01 नवम्बर 1956 को हुआ। भारत के मध्य में स्थित होने के कारण पं. नेहरू ने इसे 'मध्य प्रदेश' कहा। पुनर्गठन के समय म.प्र की भौगोलिक एवं प्रादेशिक स्थिति निम्न वत -

<u>पुनर्गठन के समय म.प्र की स्थिति</u>

1) 1947 - 1956 तक मध्य प्रदेश का समय - तीन भागों में था पार्ट A - जिसमें मध्य प्रांत एवं बरार शामिल थे, पार्ट B - जिसके अन्तर्गत इंदौर, ग्वालियर एवं नरसिंहगढ़ तथा पार्ट C में विन्ध्य प्रदेश अजयगढ़, पन्ना, दतिया, ओरछा, बिजावर शामिल थे तथा भोपाल रियासत पार्ट C के अन्तर्गत शामिल था।

<u>1956 की स्थिति</u> - फजल अली आयोग की सिफारिश पर पार्ट A, B, C को मिलाकर 01 नवम्बर 1956 को म.प्र का गठन किया गया। इसमें 43 जिले सम्मिलित थे।

<u>म.प्र गठन</u>

- 1947 - 1956
  - पार्ट A
  - पार्ट B
  - पार्ट C
- 1956 (फजल अली आयोग)
  - 43 जिलों का गठन
- 2000 (विभाजन)
  - छत्तीसगढ़ का गठन
  - जिलों की संख्या
  - 52

- आवा पानी युद्ध में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- तात्या टोपे को नर्मदा तट पार कराया।
- अंग्रेजों ने उन्हें पकड़कर पोर्ट ब्लेयर में भेज दिया जहाँ उनकी मृत्यु हो गई।

<u>तन्त्या भील</u> - खरगोन के निर गांव निवासी 1857 की क्रान्ति में भाग लिया।

- परिचय निमाड़ क्षेत्र में ब्रिटिशों द्वारा आदिवासियों के ऊपर हो रहे शोषण, अत्याचार एवं दमन के खिलाफ संघर्ष किया।
- वहन मुखिया में रहमी नबावों समय अंग्रेजों ने गिरफ्तार किया।
- उन्हें भारतीय 'रॉबिन हुड' की संज्ञा दी जाती है।

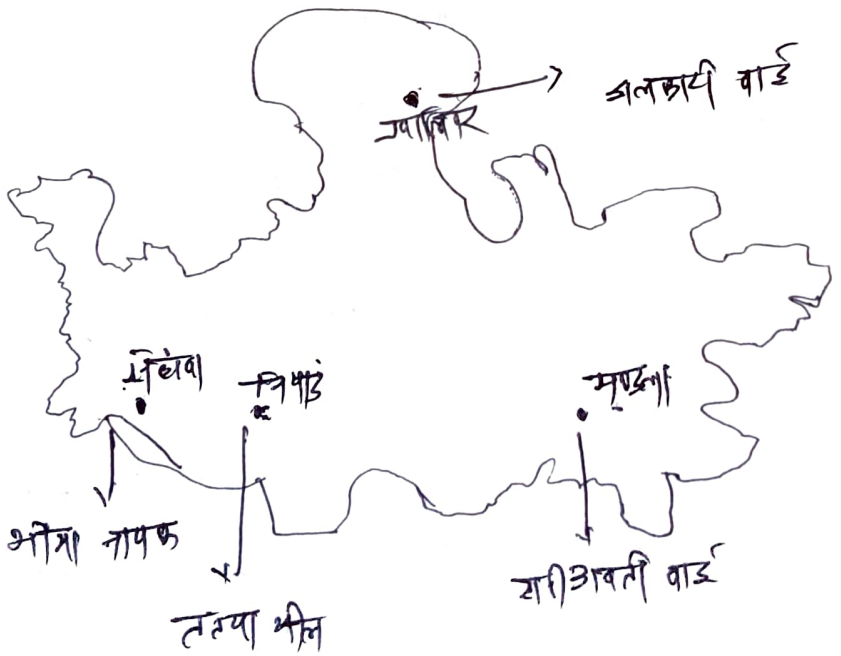

इन आदिवासियों के अतिरिक्त अन्य जो मध्य भारत की जौन कुंवर चैन सिंह, राजा बख्तावर सिंह, रणमत सिंह आदि ने 1857 की क्रान्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

Q 3.

3A] 1857 की क्रांति का आरम्भ नर्मदा घाटी की - मंगल पाण्डे द्वारा हत्या के साथ हुआ। इस क्रांति की क्रांति की लहर उत्तर एवं मध्य भारत में भी दिखाई दी। मध्य प्रदेश के कई भू-भागों यथा ग्वालियर, झांसी, सागर, निमाड़ आदि क्षेत्रों में 1857 की क्रांति का संकेत मिलते हैं। इस क्रांति में आदिवासियों एवं गैर आदिवासी राजाओं, नेताओं ने भूमिका निभाई।

1857 की क्रांति के प्रमुख नेतृत्व कर्ता निम्न लिखित है।

क्र.	क्षेत्र	नेतृत्व कर्ता
1.	सेंधवा	भीमा नायक
2	निमाड़	तात्यां भील
3	मण्डला	रानी अवंती बाई + गिरधारी बाई
4	ग्वालियर	रानी लक्ष्मी बाई

1857 की क्रांति में ग्वालियर झांसी एवं निमाड़ अंचलों में आदिवासियों ने बढ़चढ़कर भाग लिया। इन आदिवासी नेताओं में प्रमुख भूमिका निभाने वाले - आदिवासी क्रांतिकारियों की भूमिका निम्न लिखित है -

→ भीमा नायक :- भीमा नायक ने 1857 की क्रांति में जनजातियों का नेतृत्व किया।

- उनका कार्य क्षेत्र बड़वानी से लेकर महाराष्ट्र तक था।

2. मराठों से संधि - मराठों से संधि के उपरान्त औरंगजेब ने छत्रसाल को 'राजा' की उपाधि दी।
'संधि का परिणाम' छत्रसाल स्वतंत्र शासक बना।

3. ओरछा को नयी राजधानी बनाया।

4. वारियों का युद्ध - युद्ध पश्चात मुगलों ने छत्रसाल को 'महाराजा' की उपाधि दी।

5. कालिंजर विजय - कालिंजर विजित कर छत्रसाल ने पन्ना को राजधानी घोषित किया।

6. गुरु प्राणनाथ की भूमिका - प्राणनाथ छत्रसाल के गुरु थे जिन्होंने 'प्रणामी' सम्प्रदाय चलाया। शौर्य और पराक्रम का पाठ पढ़ाया।

निष्कर्ष - कहा जाता है छत्रसाल एक कुशल संगठक, प्रतापी शूरवीर राजा था। बंगश खां के आक्रमण पर छत्रसाल ने बाजी राव पेशवा से सहायता प्राप्त किया तथा अपनी पुत्री 'मस्तानी' का विवाह उनसे किया।
कवि 'भूषण' ने उनके शौर्य और पराक्रम का यशोगान किया -

"इत यमुना उत नर्मदा, इत चंबल उत टोंस।
छत्रसाल सों लरन की, रही न काहू हौंस॥"

राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर भी पाया जाता है।

प्रादेशिक महत्व - 1. बौद्ध संस्कृति का प्रतीक
2. आर्थिक एवं रोजगार सृजन में सहायक
3. पर्यटन एवं संस्कृति को बढ़ावा

राष्ट्रीय महत्व 1. अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों को बढ़ावा देने में
2. राष्ट्रीय एकता व विकास में सहायक
3. वैश्विक कल्याण दिलाने में महत्वपूर्ण

अन्तर्राष्ट्रीय महत्व

सांची का अन्तर्राष्ट्रीय महत्व

1. बुद्ध के उपदेशों का वैश्विक प्रचार।
2. वैश्विक मानव कल्याण एवं शांति स्थापना में
3. युद्ध की नीति का त्याग एवं बुद्ध की नीति को आत्मसात।

स्पष्ट रूप से सांची न केवल एक प्रदेश बल्कि राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय महत्व का केन्द्र बिन्दु है बल्कि शांति एवं विश्व कल्याण का संदेश वाहक भी है। इसकी महत्व को समझते हुये भारत सरकार ने इसे 'बौद्ध सर्किट' के रूप में विकसित करने का संकल्प लिया है।

---

2 K] राजा छत्रसाल ओरछा के शासक चंपत राय के पुत्र थे। उनका जीवन सत्व कालीन मुगल राजा औरंगजेब की सेनाओं से लड़ते हुए बीता। उनकी बहादुरी एवं शौर्य पराक्रम के कारण उन्हें 'बुंदेला केसरी' भी कहा जाता है। उनके जीवन की प्रमुख घटनाओं एवं उपलब्धियों का वर्णन निम्न है -

1. छत्रसाल का विद्रोह एवं स्वतंत्र बुंदेला राज्य की स्थापना
   - औरंगजेब के विरुद्ध संघर्ष जारी रखा।
   - 1675 ई. में 'पन्ना' को जीतकर राजधानी बनाया

पचमढ़ी - ब्रिटिश अधिकारी कैप्टन जे फारसीथ ने पचमढ़ी - खोज की। इसे 'सतपुड़ा की रानी' एवं म.प्र की - ग्रीष्म कालीन राजधानी कहा जाता है।
यह एक प्रसिद्ध हिल स्टेशन है।
म.प्र का 'जड़ी बूटी' केन्द्र स्थापित है।

जल प्रपात - म.प्र में सर्वाधिक जल प्रपात है। जैसे - चचाई (130 मी), बहुती (198 मी), केवटी, डचेस जल प्रपात (पचमढ़ी), धुआँधार आदि।

राष्ट्रीय उद्यान - म.प्र में 11 राष्ट्रीय उद्यान है। जैसे - कान्हा राष्ट्रीय उद्यान (मण्डला), पेंच राष्ट्रीय उद्यान (सिवनी - छिंदवाड़ा) आदि।

अभयारण्य - म.प्र के प्रमुख अभयारण्य जो पशु - एवं पक्षियों को संरक्षण प्रदान करते हैं।
गांधीसागर अभयारण्य, सरदारपुर पक्षी अभयारण्य (धार),
घड़ियाल संरक्षण अभयारण्य (श्योपुर)
अन्य प्राकृतिक पर्यटन स्थलों में मुकुंदपुर टाइगर सफारी एवं वन्यजीव राष्ट्रीय उद्यान है। पर्यटन क्षेत्र के विकास ने आर्थिक समृद्धि एवं रोजगार के नये अवसर सृजित किए।

---

2)] म.प्र के रायसेन जिले में स्थित 'सांची' विश्व विख्यात प्राचीन 'बौद्ध तीर्थ स्थल' के रूप में जाना जाता है।
इस स्तूप का निर्माण मौर्य वंश का सम्राट अशोक ने तीसरी सदी ईसा पूर्व में करवाया था।
सांची को वर्ष 1989 में विश्व धरोहर की सूची में शामिल किया गया। इसका महत्व प्राचीन

स्थापना का उद्देश्य :

1. मानव की विकास यात्रा को प्रदर्शित करना।
2. मानव जाति की कहानी के प्रति सम्मान।
3. प्रागैतिहासिक सामाजिक जीवन एवं संस्कृति का संयोजन

संग्रहालय की विशेषतायें - संग्रहालय के तीन विशिष्ट 3 आयाम है।

1. मानव का विकास और परिवर्तन
2. प्रागैतिहासिक एवं आद्य ऐतिहासिक काल में सांस्कृतिक समाज
3. स्वयं सामयिक संस्कृतियाँ एवं आदिवासी संस्कृतियाँ।

प्रदर्शनी एवं आकर्षण केन्द्र :

• ट्राइबल हेरिटेज • ग्रामीण बस्ती आयोजन

इसके अतिरिक्त इंदिरा गांधी मानव संग्रहालय में ग्रामीण आदिवासी जीवन की भौतिक एवं सांस्कृतिक संयोजन का विवरण मिलता है।

---

2 I) प्रकृति ने म.प्र. को अमूल्य प्राकृतिक सौन्दर्यता से परिपूर्ण किया है। यहाँ पर स्थित विभिन्न धार्मिक, ऐतिहासिक, प्राकृतिक स्थल स्वतः ही लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं।

पर्यटन की दृष्टि से प्राकृतिक स्थलों का विवरण निम्न है

प्राकृतिक पर्यटन स्थल -
- हिल स्टेशन - पचमढ़ी
- जल प्रपात - चचाई, अमरकंटक, भेड़ाघाट
- राष्ट्रीय उद्यान - कान्हा, पेंच
- अभयारण्य - रातापानी - नौरादेही

2 F] म.प्र. भारत का हृदय प्रदेश है। यह क्षेत्र हिन्दू-जैन, बौद्धों तथा सिक्खों को समाहित करता है। धार्मिक स्थलों का संगम रहा है जो एवं सांस्कृतिक एकता को सुस्पष्ट करते हैं। जैन धर्म के प्रमुख धार्मिक स्थल निम्नलिखित हैं।

जैन धर्म स्थल

- सोनागिरि
  - दतिया में स्थित
  - 108 मंदिरों का समूह
- पुष्प गिरि
  - तीर्थ केन्द्र (देवास)
- मंगल गिरि (सागर)
- मुक्तागिरि बैतूल
- कुण्डलपुर (दमोह)

अन्य धर्म स्थल केन्द्र - खजुराहो - पार्श्वनाथ + आदिनाथ मंदिर
बड़वानी - बावन गजा
पावागिरि - खरगौन 99 मंदिर

जैन धर्म के धार्मिक स्थलों में उन सभी ऐतिहासिक स्थलों का अत्यंत महत्व है, जो म.प्र. की धार्मिक सांस्कृतिक धरोहर भी है।

---

2 G]. मानव जीवन के विकास तथा सांस्कृतिक गतिविधियों को उजागर एवं प्रदर्शित करने वाला एशिया का एक मात्र केन्द्र, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय है। इसकी स्थापना 1985 में श्यामला हिल्स भोपाल में लगभग 200 एकड़ में की गई है। यह भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अधीन एक स्वायत्त शासी संगठन है।

4. हरवाही गाथा का विकास - जैसे सिया की गोडी, सिया की आठी हरवाही गोडी आदि।

5 दीपक गाथा - एक सिलसिला था जो स्वयं दीपक प्रज्व प्रज्वला की क्षमता रखता था।

इसके अतिरिक्त अन्य जैसे 'बादल गाथा' भी ताना पंथ के सिलसिला गाथा में से एक था। म.प्र. सरकार ने इसी स्मृति बनाये रखने के लिए 1980 में 'ताना पंथ सभा' की स्थापना की तथा ग्वालियर में 'ताना पंथ समारोह' प्रति वर्ष आयोजित किया जाता है।

2E] लोक चित्रकला प्रादेशिक संस्कृति की भिन्नताओं को प्रदर्शित करते हैं। ये पौराणिक, प्राकृतिक एवं आध्यात्मिक मान्यताओं पर आधारित होती है। म.प्र. की लोक चित्रकलाओं की विविधताओं को क्षेत्रवार वर्गीकृत कर समझा जा सकता है। जो निम्नवत है

लोकचित्रकला

मालवा	निमाड़ी	बुंदेलखण्ड	बघेलखण्ड
1. मांडणा	1. जिरोती	1. नौरता	1. कोहबर
2. चित्रावण	2 थापा	2. मोरते	2. छठी चित्र
3. संजा फुली	3. ईरता	3. मोर पुतैला	3. तिलंगा

इन लोक चित्रकलाओं की विभिन्न अवसरों (शादी-विवाह) त्यौहार एवं प्राकृतिक सौंदर्य के अनुरूप स्वदेशी प्राकृतिक रंगों की सहायता से भित्ति या जमीन पर सुंदर चित्रण किया जाता है।

2 b] भारत भवन म.प्र. की राजधानी भोपाल में स्थित एक सांस्कृतिक भवन है। जिसका निर्माण 13 फरवरी 1982 को हुआ। चार्ल्स कोरिया इस भवन के वास्तुकार थे। इस भवन को विभिन्न कला कृतियों के केन्द्र के रूप में वर्गीकृत किया गया है। जो निम्न पत है।

भारत भवन के 6 भागों में वर्गीकरण किया गया।

1. रूपंकर - यह 'ललित कला' का संग्रहालय है।
2. रंगमंडल - इसका संबंध 'रंगमंच' से है।
3. वागर्थ - यह 'कविताओं' का केन्द्र है।
4. अनहद - यह शास्त्रीय और 'लोकसंगीत' का केन्द्र है।
5. छवि - यह 'सिनेमा से जुड़ी गतिविधियों' के लिए है।
6. आकार - यह 'मूर्तिकला' व 'पेंटिंग' के लिए है।

इसके अतिरिक्त 'आश्रम' कलाकारों के लिए आवासीय परिसर है। सृजनात्मक कला के संवर्धन और संरक्षण में भारत भवन का महत्वपूर्ण योगदान है।

---

2 D]. मुगल सम्राट अकबर के नवरत्नों में से एक 'तानसेन' हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। उन्होंने कई रागों एवं गायन शैली का विकास कर भारतीय शास्त्रीय संगीत की नई पहचान दी। शास्त्रीय संगीत में उनका योगदान निम्न प्रकार है-

1) ध्रुपद गायन शैली का विकास
2) रागों की रचना जैसे मियां की टोड़ी, दरबारी आदि
3) संगीत रचनाओं का संकलन - रागमाला, संगीत सार आदि।

Q. 2

29]. स्वतंत्रता (15 अगस्त 1947) के समय मध्य प्रदेश नाम का कोई राज्य अस्तित्व में नहीं था। 1947 में जो राज्यों की श्रेणी बनी थी उसमें वर्तमान मध्य प्रदेश को पार्ट A, बी, तथा पार्ट C में वर्गीकृत किया गया था। इन भागों में शामिल किये गये क्षेत्रों की स्थिति निम्न वत थी।

पार्ट A - इसके अन्तर्गत सेंट्रल प्रांत्स, बरार एवं प्रमुख रियासत क्षेत्र मकराई (हरदा), बिदर्भ (नागपुर), महाकौशल (जबलपुर) शामिल थे।

• पार्ट 'A' का राजप्रमुख पं. रवि शंकर शुक्ल तथा गवर्नर रामचन्द्र राव थे।

पार्ट बी - इसके अन्तर्गत इन्दौर, ग्वालियर तथा राजगढ़ एवं नरसिंहगढ़ का क्षेत्र शामिल था।

• इसके राजप्रमुख जीवाजी राव सिंधिया तथा गवर्नर तख्तमल जैन थे।

पार्ट C - इसके अन्तर्गत विन्ध्य प्रदेश, अजयगढ़ पन्ना, दतिया एवं ओरछा का क्षेत्र शामिल था। इसके राजप्रमुख शम्भू नाथ शुक्ल थे।

भोपाल स्टेट - यह पार्ट 'सी' में शामिल था। इसके मुख्य मंत्री डॉ शंकर दयाल शर्मा थे।
यह रियासत भोपाल के नवाब 'उबैदुल्ला खाँ' के शासन क्षेत्र में था।

स्वतंत्र भारत का मध्यवर्ती भू भाग तीन भागों में विभक्त था जिसका विस्तार नागपुर तक था। 1956 के राज्य पुनर्गठन आयोग द्वारा 01 नवम्बर 1956 को नये - मध्य प्रदेश का गठन किया गया।

1 H] मण्डलेश्वर दुर्ग खरगोन में नर्मदा नदी के उत्तरी तट पर अवस्थित है। आदि शंकराचार्य ने यहाँ पर मण्डन मिश्र तथा उनकी पत्नी भारती देवी को शास्त्रार्थ में पराजित किया। म.प्र. सरकार ने इसे पवित्र नगर-घोषित किया है।

1 I] धार जिले के मांडू में स्थित 'जहाज महल' का निर्माण खिलजी वंश के शासक गियासुद्दीन खिलजी ने कराया यह दो झीलों कपूर तालाब एवं मुंज तालाब के मध्य जहाज जैसी आकृति में बना है।

1 J] रानी कमलापति गिन्नौरगढ़ के शासक राजा निजाम शाह की रानी थी। उनके नाम से भोपाल में रानी कमलापति महल का निर्माण किया गया।
1989 ई में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा इसे 'संरक्षित स्मारक' घोषित कर दिया गया।

1 K] कालिंजर के चंदेल राजा परमार्दि देव के समकालीन कवि जगनिक ने 'आल्हा खण्ड' की रचना की। 'आल्हा खण्ड' में 'कन्नौजी' भाषा की बहुलता है।

1 L] खूनी दरवाजा दिल्ली में स्थित एक तोरण द्वार है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग ने इसे 'सुरक्षित स्मारक' घोषित किया है।

1 m].

1 O] चित्रावण मालवा अंचल में प्रचलित एक भित्ति चित्रकला है।
• विवाह के समय घरों में दीवारों पर उकेरी

1 P]. - सौभाग्य योजना का संबंध गरीब परिवारों को बिजली का मुफ्त कनेक्शन दिया गया।

1 Q]- म.प्र सरकार द्वारा सस्ती दरों पर बिजली उपलब्ध कराता है- अटल गृह ज्योति योजना का उद्देश्य
• न्यूनतम बिजली बिल - रु - 100/.

15/01/201

Part A

Q. 1.

1 a]. कालिंजर के राजा कीर्ति सिंह की पुत्री , गोंडवाना के शासक संग्राम सिंह की बहु , वीरनारायण की संरक्षिका ने जबलपुर के निकट नरई नाला के समीप मुगल सेना पति आसफ खाँ से लोहा लिया ।
इनकी समाधि 'जबलपुर' मे स्थित है ।

1 b] म.प्र के होशंगाबाद से संबंध रखने वाले गाँधी वादी कवि थे प्रख्यात सनातनी प्रसाद मिश्र हिन्दी के दूसरे सप्तक कवियों में से एक थे ।
इनकी कृतियां - गीत फरोश , बुनी हुई रस्सी , खुशबू के शिलालेख आदि ।

1 c] रीति काल के तीन प्रमुख कवियों मे से एक कवि भूषण 'वीर रस' मे काव्य लेखन तथा बुंदेला नरेश छत्रसाल के दरबार मे रहे ।
इनकी कृतियां - शिवा बावनी , छत्रसाल दशक, शिवराज भूषण

1 D] भीमा नायक 1857 की क्रांति मे अंग्रेजो के विरुद्ध आंदोलन के युद्ध मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
इनका कार्य क्षेत्र खान देश था । मृत्यु पोर्ट ब्लेयर मे हुई ।

1 E]

1 F].

1 G] लाल कुर्ती संगठन की स्थापना खान अब्दुल गफ्फार खाँ ने की । इन्हे सीमान्त गांधी के नाम से भारत मे कांग्रेस के आंदोलन का समर्थन किया ।